राजगोपाल सिंह वर्मा के कहानी-संग्रहों में प्रेम कथा चित्रण: ऐतिहासिक और भावनात्मक परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. **निशा**,
शोधार्थी, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश
2. **डॉ. सीमा शर्मा**,
शोध-निर्देशक, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश

How to Cite this Article:

निशा, (2026). राजगोपाल सिंह वर्मा के कहानी-संग्रहों में प्रेम कथा चित्रण: ऐतिहासिक और भावनात्मक परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management, 02(05). https://doi.org/10.55041/ijcope.v2i5.553

License:

This article is published under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author(s) and the source are credited.

© The Author(s). Published by International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management.

https://doi.org/ 10.55041/ijcope.v2i5.553

शोध का सार

राजगोपाल सिंह वर्मा समकालीन हिंदी कथा साहित्य के महत्त्वपूर्ण कथाकार हैं, जिनकी रचनाओं में प्रेम, सामाजिक यथार्थ, इतिहास और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त समन्वय दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उनके कथा-साहित्य में चित्रित प्रेम के विविध आयामों का विश्लेषण करना है। वर्मा की कहानियों में प्रेम केवल भावनात्मक अनुभूति नहीं, बल्कि सामाजिक बंधनों, सांस्कृतिक मान्यताओं और मानवीय अंतर्द्वंद्वों से जुड़ा हुआ व्यापक जीवनानुभव है। उनकी प्रेम कथाएँ पारंपरिक सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना, आत्मिक समर्पण और अस्तित्वगत संघर्ष को अभिव्यक्त करती हैं।

इस अध्ययन में प्रेम को एक सार्वभौमिक अनुभूति के रूप में देखा गया है, जो धर्म, जाति, राष्ट्र और सामाजिक संरचनाओं से परे मानव जीवन की मूल संवेदना का प्रतिनिधित्व करती है। लेखक की कहानियों में प्रेम जीवन की जिजीविषा, आत्मीयता और समर्पण का प्रतीक बनकर उभरता है। साथ ही, प्रेम और अहंकार, प्रेम और मालकियत तथा प्रेम और ईर्ष्या के अंतर्संबंधों का भी सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। लेखक यह स्थापित करते हैं कि जहाँ स्वामित्व और अहंकार का भाव प्रबल होता है, वहाँ प्रेम का वास्तविक स्वरूप क्षीण हो जाता है।

शोध में यह भी स्पष्ट किया गया है कि वर्मा की प्रेम कथाएँ केवल आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उनमें दैहिक आकर्षण, विफलता, विडंबना और सामाजिक यथार्थ के विविध पक्ष भी प्रतिबिंबित होते हैं। इस प्रकार उनका कथा-साहित्य प्रेम को बहुआयामी मानवीय अनुभव के रूप में स्थापित करता है। प्रस्तुत अध्ययन हिंदी कथा साहित्य में प्रेम-विमर्श की नई संभावनाओं को उद्घाटित करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द : बहुआयामी, अनुभूति, संकुचित, अवमुक्त, वर्जना, जिजीविषा, मालकियत, प्रतिबिंबित, चिरस्थायी, निषेध।

प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में राजगोपाल सिंह वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक यथार्थ और ऐतिहासिक चेतना के विविध आयामों को अभिव्यक्त करती हैं। विशेष रूप से उनकी प्रेम कथाएँ केवल भावनात्मक आकर्षण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें जीवन-संघर्ष, आत्मीयता, समर्पण, सामाजिक बंधन और मानवीय अंतर्द्वंद्वों का गहन चित्रण मिलता है। वर्मा प्रेम को एक ऐसी सार्वभौमिक अनुभूति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो जाति, धर्म, वर्ग और सामाजिक सीमाओं से परे मानव अस्तित्व की मूल संवेदना से जुड़ी है। उनकी कहानियों में प्रेम कभी त्याग और समर्पण का रूप धारण करता है, तो कभी विडंबना, विफलता और सामाजिक विसंगतियों को उजागर करता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य राजगोपाल सिंह वर्मा के कथा-साहित्य में चित्रित प्रेम के विविध रूपों, उसके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों तथा मानवीय मूल्यों के साथ उसके संबंध का अध्ययन करना है। राजगोपाल सिंह वर्मा ने अपनी ऐतिहासिक कहानियों में प्रेम का चित्रण केवल भावनात्मक नहीं बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विमर्शों से भी जुड़ा हुआ है। वर्मा जी ने अपनी कहानी 'एक थी रूही' में दिखाया है कि जब जिन्ना की पत्नी रूही अपनी मृत्यु के समीप थी उस समय जिन्ना उससे अपने बीते हुए पलों को याद करते हुए कहता है "अवसाद भरी बातें क्यों करती? मैं, तुम्हारा जे, तुम बिन अधूरा हूँ। देखो .... इन आँखों में देखो, यहाँ तुम्हे वही जे दिखेगा, जिसे तुम हर खेल में हराया करती थी। मुझे तुमसे हारना बहुत पसंद है ...।"1 यहाँ पर एक पति-पत्नी के प्रेम को दर्शाया गया है। पत्नी की खुशी के लिए पति हारने में भी अपनी खुशी समझता है।

प्रेम न तो धर्म देखता है न आयु देखता है। जब किसी पर प्रेम हावी हो जाता है तो सब दीवारों को तोड़ दिया जाता है। जब जिन्ना और रूही को आपस में प्रेम हुआ तो उस समय जिन्ना रूही से 26 वर्ष बड़े थे। जिन्ना मुस्लिम धर्म से संबंध रखते थे और रूही पारसी परिवार से संबंध रखती थी। जब दोनों ने एक होने के बात सोची तो धर्म, आयु की दीवार को तोड़कर 1918 ई. में निकाह कर लिया "अपने प्रेम के खातिर जिन्ना ने वर्ष 1918 में रूही को इतना मोहित कर दिया था कि वह उनके जीवन भर के साथ के लिए सब लोगों के विरोध के बावजूद निकाह कर बैठी। वह मुस्लिम बन गई, नाम मिला मरियम।"2

जिन्ना ने जिस समय रूही से विवाह किया वे 42 वर्ष के हो चुके थे और रूही के पिता से मात्र 3 वर्ष छोटे थे। परन्तु दोनों ने प्रेम के चलते इस बंधन को तोड़कर समाज को चकित कर दिया "रूही एक सम्पन्न परिवार-पारसी नवाब की जिंदादिल, खूबसूरत सोलह साल की लड़की थी, जबकि जिन्ना 42 वर्ष के परिपक्व इंसान थे, उम्र के फासले उसके लिए बाधा नहीं बने, जबकि उसकी उम्र में उसे जिन्ना में अपने पिता का अक्स देखना चाहिए था। जिन्ना उसके पिता से मात्र 3 वर्ष छोटे थे, लेकिन प्रेम के सामने सब कुछ विस्मृत हो जाया करता है। जिन जिन्ना को वह आरंभिक दिनों में अंकल कहा कहरती थी। अब वह उसकी बाँहों में सुकून ढूँढा करते थे। खुद रूही के लिए भी यह उसके प्यार की इंतहा थी।"3 वर्मा जी ने इसी कहानी में दिखाया है कि इतिहास ने कुछ वर्षों पश्चात् खुद को दोहराया है? जिन्ना और रूही के विवाह से जन्मी उनकी एकमात्र बेटी दीना ने भी अपने माता-पिता की तरह प्रेम किया और दूसरे धर्म के व्यक्ति से शादी कर ली। जिन्ना की बेटी दीना ने पारसी समुदाय के उद्योगपति नेविल वाडिया से विवाह कर लिया। पिता के विरोध और धर्म के अलग होने पर भी दीना ने अपने प्रेम को नहीं ठुकराया और पिता को दूसरे धर्म में शादी करने पर जवाब देती है "क्या तुम्हें लाखों-करोड़ों मुस्लिम नवजवानों में से कोई भी विवाह योग्य नहीं मिला? तब दीना ने सौम्यता से उन्हें याद

दिलाया कि, आपने भी तो एक पारसी स्त्री से विवाह किया था। आपने क्यों नहीं मुस्लिम स्त्री चुनी?'' इस प्रकार प्रेम परवान चढ़ता है तो वह धर्म, जात-पात नहीं देखता। ऐसे समय में वे समाज और परिवार वालों की कोई परवाह नहीं करते। उन्हें बस उन्हें प्रेमी में ही सबकुछ दिखाई देता है। प्रेम की जमीन कहीं भी, कभी भी उर्वरा हो सकती है। वह न जगह देखती है, न जाति और सम्प्रदाय अथवा निर्धनता-समृद्धता। वह तो सिर्फ एक अनुभूति है जो इंसान को एक बेहतर व्यक्तित्व का विकास करने का रास्ता दिखाती है।

वर्मा जी ने 'इश्क ... लखनवी मिजाज का' कहानी में दिखाया है कि जब भारत-पाकिस्तान अलग नहीं हुए थे उस समय लियाकत अली 1926 ई. के चुनाव में मुजफ्फरनगर को मुस्लिम आरक्षित सीट से चुनाव जीत कर लखनऊ की असेंबली में पहुँचे थे। लियाकत अली को लखनऊ विश्वविद्यालय की छात्रा आइरीन मारग्रेट पंत से प्यार हो गया। लियाकत अली मुस्लिम समाज से संबंध रखते थे और आइरीन मारग्रेट पंत के पूर्वज अल्मोड़ा के प्रतिष्ठित ब्राह्मण थे। मगर उन्होंने किसी कारण ईसाई धर्म को अपना लिया था। इसी आइरीन मारग्रेट के नाम में दोनों धर्म के नाम दिखाई देते हैं। दोनों के धर्म अलग होने पर भी उनका प्यार कम न हुआ और एक दिन लियाकल अली ने मारग्रेट को निकाह के लिए ऑफर कर दिया ''मैं लियाकत अली खाँ मिस आइरीन .... आप को अपनी शरीक-ए-हयात बनाने की इल्तिजा करता हूँ। यह मेरी खुशनसीबी होगी और मुझ पर ताउम्र का अहसान होगा, आप अगर मेरी इस गुजारिश को कबूल फरमाएँ।''4 आइरीन ने उसी समय हाँ करना उचित नहीं समझा मगर उनकी आँखों से लग रहा था, उन्हें यह रिश्ता स्वीकार है। लियाकत ने उसे कहा आप समय लीजिए मैं आपके जवाब का इंतजार करूँगा। ''नीची निगाह किये ही मैडम आइरिन ने सहमति में गर्दन हिला दी। जब विदा हुए तो चोर निगाहों से नवाबजादे को देखकर आइरीन एकबारगी मुस्करा दी। उसी वक्त लियाकत को समझ आ गया था कि आधी सहमति मिल चुकी है।''5

जिस समय लियाकत अली ने आइरीन मारग्रेट को शादी के लिए प्रस्ताव दिया तब लियाकत अली पहले से एक शादी कर चुके थे और वे आइरीन से 10 वर्ष बड़े थे लेकिन प्यार में आइरीन ये सब भूल चुकी थी ''वह पुरुष प्रथम प्रथमतः मारग्रेट आइरीन पंत से लगभग दस साल बड़ा था। दूसरे पूर्व में ही विवाहित था और तीसरी बात जो उसको नापसंद करने का बड़ा कारण थी, उसका विपरित संस्कृति और समुदाय से .... मुस्लिम होना था।''6 लेकिन आइरीन ने समाज और परिवार को अनदेखा करते हुए लियाकत अली को ही अपना संसार मान लिया और शादी के लिए हाँ कर दी। शादी के बाद आइरीन ने मुस्लिम धर्म को अपना लिया और राना बेगम नाम रख लिया। विभाजन के बाद लियाकत अली पाकिस्तान का प्रथम प्रधानमंत्री बन गया मगर 1951 ई॰ में उनकी हत्या कर दी गई। राना बेगम ने हार नहीं मानी और उन्होंने राजनीति में सक्रिय भाग लिया। उन्हें अनेक देशों का राजदूत बनाया गया और भुट्टों सरकार में वित्तमंत्री भी बनी ''आइरीन से राना बेगम बनी यह महिला नीदरलैंड और इटली में पाकिस्तान की राजदूत तथा भुट्टो सरकार में पाकिस्तान के आर्थिक मामलों की मंत्री भी रही। उसने पाकिस्तान की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए जो काम किया वह बेमिसाल था।''7

लियाकत अली अपनी पहली पत्नी को बहुत प्रेम करते थे। मुस्लिम समाज में औरतों को बुर्का पहनने पर जोर दिया जाता है मगर लियाकत अली खाँ एक बार अपनी पत्नी को बाहर घुमाने के लिए ले जाते हैं और वे वहाँ पर उन्हें पर्दा न करने की स्वीकृति दे देते हैं। इस बात पर उसका परिवार भड़क जाता है और उनका तलाक करा देते हैं ''दरअसल मुस्लिम होते हुए भी लियाकत के विवाह संबंधी विचार आधुनिकता के थे। वह जब तक साथ रहे, उन्होनंे अपनी पहली पत्नी के साथ भी मन से निर्वाह किया, हालाँकि यह एक प्रकार से अधकचरी

उम्र का विवाह था, जो अपने ही बोझ में टूट गया था। उनके पेरंट्स उस समय इस बात से नाराज हो गये थे कि वह जहाँगीरा बेगम को बिना पर्दा शिमला घुमाने ले गये थे।''8

वर्मा जी ने 'इश्क जो मुकम्मल न हुआ' कहानी में दिखाया है कि चावड़ी बाजार के कोठे पर फरजाना नृत्य करती थी मगर एक दिन रेन्हार्ट समरू उस कोठे पर नृत्य देखने के लिए चले जाते हैं। फरजाना ने समरू के समक्ष कत्थक शैली में नृत्य प्रस्तुत किया जिसे देखकर रेन्हार्ट समरू फरजाना के सूरत, सीरत और गले पर ऐसा मुग्ध हुआ कि उसने फरजाना से शादी कर ली। मगर भाग्य में कुछ और लिखा था और कुछ वर्षों पश्चात् रेन्हार्ट समरू की मृत्यु हो गइ। छोटी उम्र में ही विधवा हो गई मगर उसने दोबारा शादी नहीं की। बेगम समरू बीते पलों को याद करते हुए सोचती है ''बेगम के मन में समरू साहब के प्रेम और श्रद्धा के भाव आज भी जवां थे। वह समझती थी कि आज जिस भी मुकाम पर हैं, उसके लिए जिम्मेदार रेन्हार्ट समरू ही थे। वे न होते तो शायह वह एक अदना सी नर्तकी बनकर चावड़ी बाजार के कोठे की शोभा बढ़ा रही होती और फिर ढलती उम्र मंे वहाँ भी कौन पूछता उसको।''9

बेगम समरू की फौज में ली-बासे नाम का एक सैन्य अधिकारी था जो बेगम को अत्यधिक प्यार करता है। वह बेगम के साथ जीने-मरने का वायदा करता है। एक बार समरू बेगम की फौज में विद्रोह हो जाता है और विद्रोही सैनिक उन्हें मारना चाहते हैं। ली-वासे बेगम समरू के साथ अंधेरे में किसी दूसरे स्थान पर जा रहे थे तभी विद्रोही सैनिकों ने हमला कर दिया। इस हमले में बेगम समरू घायल होकर बेहोश हो जाती हैं मगर ली-वासे उनको मरा समझ कर स्वयं को गोली मार लेता है और अपना वायदा पूरा करता है ''रक्त से नहाए बेगम के शरीर को देखकर ली-वासे से रहा न गया। कुछ सोचने का समय न था। फिर भी उसने बेगम को हिला-डुला कर देखा। वह मृतप्राय थी। अगले ही पल 'धाँय' की आवाज गूंज उठी। वादे के मुताबिक ली-वासे ने अपने रिवाल्वर को कनपटी से सटाकर खुद को गोली मार ली थी।''10 ली-वासे ने अपने प्रेम के लिए स्वयं को भी गोली मार कर जान दे दी।

प्रेम कभी किसी जाति, ध्र्मा को देखकर नहीं होता। वर्मा जी की कहानी 'एक जाट राजकुमार का इश्क' में दिखाया गया है कि सूरजमल के बेटे जवाहर सिंह को गन्ना बेगम के चेहरा को देखकर पहली ही मुलाकात में प्यार हो जाता है। जवाहर सिंह गन्ना बेगम के धर्म का पता चलने पर भी प्यार कम न हुआ। उन्होंने उससे शादी करने का मन बना लिया और गन्ना से कहता है, "आज मिली हो, तो आज से, नहीं अभी से मेरी ही रहोगी। मैं तुमको अपनी विवाहिता बनाऊँगा। इस राज्य के अगले राजा की रानी कहलाओगी। मेरा वादा है, एक जाट की जुबान है।''11 जवाहर सिंह गन्ना बेगम का अपहरण करने की बात कहता है तो गन्ना उसे कहती है मैं मुस्लिम धर्म की हूँ तो आप अपने परिवार वालों को क्या कहोगे? "जाट वाली बात कर दी न .... उठा तो ले जायेगा पर लोग पूछेंगे कि यह है कौन तो क्या बोलोगे? मुसलमानी को कैसे निभायेगा। धर्म भ्रष्ट तो नहीं हो जाएगा। पिता को कह दूंगा कि जाटनी है .... दूर देश की। प्रेम करता हूँ। किसी और को क्या जवाब देना। हम जाट लोग कर्म को ही धर्म मानते हैं सो बेफ्रिकर रह! सुनपा नहीं क्या, वो कहते हैं कि जाट से ब्याही तो जाटनी कहलाई।''12

कहते हैं कि राजस्थान बंजर जमीन है। रेत ही रेत, बियाबान ... जहाँ हरियाली पनपना मुश्किल होता है। पर, क्या ऐसी जमीन में इंसानी मुहब्बत के रिश्ते भी नहीं पनपते? नहीं, प्रेम ऐसी भावना है जो कहीं भी पनप जाती है। इसलिए राजस्थान की प्रेम कथाओं में भी वही रंग, वैसी ही मिठास और तीखापन होता है जो आज भी वहाँ की पहचान है। अमरकोट के राजा बीसलदे का बेटा महेन्द्र राणा था जो लोद्रवा की राजकुमारी मूमल से मिलने

के पश्चात् प्रेम करने लग जाता है। जब महेन्द्र मूमल की पहली मुलाकात होती है तो उन दोनों को पता ही नहीं चलता रात कब बीत गयी। महेन्द्र जब मूमल को छोड़ कर जाता है तो वह वायदा करता है कि वह उसे मिलने अवश्य आएगा "फिर दोनों ने एक-दूसरे को समझा, बातों ही बातों में दोनों एक-दूसरे को कब दिल दे बैठे, पता ही न चला। ये भी पता न चला कि कब रात खत्म हो गयी। सुबह महेन्द्र बे-मन से अपने देश जाने को तैयार हुआ। महेन्द्र का मूमल को छोड़कर वापस जाने का मन तो नहीं था, पर मूमल से फिर लौटने का वादा कर वह विदा हुआ। उसने बोला, "मैं फिर आऊँगा मूमल, बार-बार आकर तुमसे मिलूँगा।"13

महेन्द्र अपने बहनोई हमीर के साथ अमरकोट पहुँच गया मगर उसे मूमल की याद सता रही थी। महेन्द्र ने मूमल से मिलने का प्लान बनाया और उसने अपनी सेना के ऊँटों से ऐसा ऊँट ढूंढ निकाला जो रातों रात लोद्रवा जाकर सुबह होते ही वापस अमरकोट आ जाए। प्रेम की लगन ही ऐसी लगी थी जो अपनी सात पत्नियों को छोड़कर मूमल से मिलने के लिए तड़प रहा था। "अब प्रेम परवान चढ़ निकला। हर रोज महेन्द्र लगभग सौ कासे दूर से चीतल पर सवार को, मूमल के पास लोद्रवा जा पहुँचता। भोर से पूर्व ही वह फिर चीतल पर चढ़ता और सुबह होने से पहले अमरकोट आ पहुँचता।"14 यह सिर्फ प्रेम की शक्ति से ही हो सकता है कि आप इतनी दूरी को एक ऊँट के माध्यम से पूरा कर रहे हो। इतनी दूरी तय करने पर भी आपको कोई थकान महसूस नहीं हो रही।

एक बार मूमल की परीक्षा लेने के लिए महेन्द्र अपने नौकर को उसके पास भेजता है और कहता है कि मूमल को बोल देना महेन्द्र जी मर गए "महेन्द्र सा का नौकर सूं ... काले नाग ने डस लिया मेरे मालिक राणा जी को! अब क्या होगा ... कैसे वह मिलेंगे अपनी मूमल से।

मूमल ने नौकर के मुँह से जो सुना तो वह वहीं पर मूर्च्छित हो गई। महेन्द्र के न रहने की खबर भर से कुछ ही समय में मूमल का शरीर ठंडा हो गया।"15

महेन्द्र के मजाक ने मूमल की जान ले ली और जब महेन्द्र को इस खबर का पता चला तो वह अपनी सुध-बुध खो बैठा और कुछ समय पश्चात् अपना शरीर त्याग दिया।

प्यार वह अवस्था भी कह सकते हैं जहाँ सारे विचार, सारी इच्छायें सिमट मात्र एक बिन्दु पर केन्द्रित हो जाए और अपने पराये का कोई विभाजन ही न रहे, सिर्फ और सिर्फ खो जाने और किसी खास के प्रेम में स्वयं को समाहित कर देने की चाहत रह जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एक थी रूही ..... जिन्ना का बेमेल प्रेम, राजगोपाल सिंह वर्मा, पृष्ठ 11
2. वही, पृष्ठ 13
3. वही, पृष्ठ 15
4. इश्क .... लखनवी मिजाज का ... प्रेम जो परवाना चढ़ा, राजगोपाल सिंह वर्मा, पृष्ठ 29
5. वही, पृष्ठ 30
6. वही, पृष्ठ 24

7. वही, पृष्ठ 31

8. वही, पृष्ठ 34

9. इश्क जो मुकम्मल न हुआ, राजगोपाल सिंह वर्मा, पृष्ठ 35

10. वही, पृष्ठ 43

11. एक जाट राजकुमार का इश्क, राजगोपाल सिंह वर्मा, पृष्ठ 60

12. वही, पृष्ठ 61

13. नवी शताब्दी का राजपूताना प्रेम, राजगोपाल सिंह वर्मा, पृष्ठ 104

14. वही, पृष्ठ 105

15. वही, पृष्ठ 106